[Social Issues and Environmental Problems,Vol.3 (Iss.9:SE): Sep, 2015] 2394-3629(P) ISSN- 2350-0530(O) ISSN-
Impact Factor: 2.035 (I2OR)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i9SE.2015.3259

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

पर्यावरण प्रदूषण–मानव स्वास्थ्य (एक विश्वव्यापी समस्या)

तृप्ति जोशी
सहा. प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान) शा. कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, इन्दौर

आधुनिक विकास का प्रतीक बनकर आई औद्योगिक क्रांति के घातक पहलुओं के बारे में बहुत कम लोगो ंका ध्यान जा पाया है जाने कितने लोग औद्योगिक प्रदुषण के कारण तिल–तिल कर मरते हैं। दिनां दिन प्रदुषित होते पर्यावरण के कारण संक्रामक बीमारियाँ न सिर्फ भारत में अपितु विश्व के अधिकांश देशो ंमें बढ़ती जा रही है। भारत ही नहीं सम्पर्ण विश्व मे ंबीमारियों का खतरा हर दिन बढ़ रहा है।

संयुक्त राष्ट्र के आँकड़ों के अनुसार संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रति व्यक्ति ग्रीन हाउस उत्सर्जन की दर भारत की तुलना में 16 गुना ज्यादा है, बांगलादेश की तुलना में 60 गुना ज्यादा है। इथियोपिया तथा माली की तुलना में 200 गुना ज्यादा है। आस्ट्रेलिया, कनाडा एव ंलक्जमबर्ग जैसे विकसित देश इस मामले में अमेरिका के करीब ही है। इंग्लेण्ड मे ंपर्वी एजंलिया विश्वविद्यालय के प्रोफसेर पॉल इटंर ने एक ब्रिटिश विज्ञान सभा में कहा कि अनिश्चित मौसम के कारण आने वाली बाढ़ और सूखे के कारण भी संक्रामक बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है। इसी तरह अन्य बीमारियां समुद्री मछलियो ंके सेवन से अथवा समुद्र में सक्रमित पानी में तैरने से होती है। इसके कारण चर्म रागे और अन्य बीमारियो ंके लक्ष्ण दिखते है जो काफी घातक हाते है। इन बीमारियो ंके जीवाणु 200C या उससे ज्यादा तापमान पर पानी मे ंरहते है। समुद्री जीवाणुओ ंद्वारा हाने वाली इस बीमारी को विब्रियो वननीफिकस कहते है। जानकारी के अनुसार इस तरत के जीवाणु अमेरिका की खाड़ी मे ंपाए जाते है। और उनकी पहचान बाल्टिक सागर में तैराकी करते हुए तीन लोगो में की गई है। इसी बीमारी से डेनमार्क में एक मौत भी हुई है। इटली समुद्र तट पर रहने वाले लोग भी ओस्टिरो ंओपसिस आवेटा जीवाणु से सवमित हुए है। वास्तव में वैज्ञानिक की चिन्ता सही है कि यदि इसी तरह पर्यावतरण प्रदुषित इसी गति से बढ़ता गया तो कई संक्रामक बीमारियां विश्व के दशेो ंको घेर लगेी। चीन, भारत व विकासशील देशो को संभल जाना जरूरी है। इस समय भारत में कारो, बसो, ट्रको मोटर साईकिलो ंका उत्पादन, विक्रय और उपयोग बहुत तेजी से बढ़ रहा है, नए उद्योग भी स्थापित हो रहे है। भारत जैस`विकसित क्षेत्रफल वाले देश के पर्यावरण में इन वाहनो ंके कारण 100 करोड़ टन कार्बनडाई ऑक्साइड शामिल हाने लगगेी तब क्या होगा ? वैज्ञानिको ंका मानना है कि जो देश ग्रीन हाउस गैसो ंका सबसे कम उत्पादन करते है उन्हे ही जलवायु में हाने वाल`परिवर्तनां`से सबसे अधिक जूझना हागेा पृथ्वी के तापमान में हाने वाल`परिवर्तन से अफ्रीका महाद्वीप के कुछ भागो एशिया और दक्षिण अफ्रीका को मलेरिया जैस`रागेों या पयेजल की कमी जैसी मुश्किलो ंको झेलना होगा। विनकोसिन विश्वविद्यालय और डब्ल्यू.एच.ओ. के शोधकर्ताओ ंने जलवायु परिवर्तन के मानव जीवन पर पड़न`वाल`प्रभाव के बारे में किए गए अध्ययन मे ंपाया कि अफ्रीका तटीय देशों और अटलांटिक एव ंहिन्द महासागर के क्षेत्रो ंमें इसका जबरदस्त दुष्प्रभाव पड़ेगा। प्रो. जीनाथन पैट्ज ने कहा कि शोध पाया गया है कि जो देश इसके लिए कम जिम्मदे ार है व` ही इससे सबसे ज्यादा प्रभावित होगें । शोधकर्ताओ ंके अनुमान के मुताबिक जलवायु परिवर्तन के कारण हाने वाल`रोगो ंसे प्रभावित लोगो ंकी सख्या वर्ष 2030 तक दा`गुना हो जाएगी। इन रसायनो ंमें कुछ बहुत ही जहरीले और घातक है ये शरीर में एलर्जी पैदा करते है और शरीर के नाजुक अंगो जैस`आंख, कान, फेफड़े और मस्तिष्क पर बहुत बुरा असर डालते है। गर्भवती महिलाओं पर इसका असर इस हद तक घातक हो सकता है कि भ्रुण मे ंस्थायी विकृतियां पैदा हा`सकती है जो कई पीढ़ियां`तक बनी

रह सकती है अगर ये रसायन वायुमण्डल मे ंरिस जाए, जैसा कि भोपाल मे ंहुआ तो नतीजा साफ है मौत बड़ ैमाने पर मौत । भोपाल गैस काण्ड को हम नही भूले है परन्तु विश्व मे ंभोपालो ंकी कमी नही, हर कही, हर कभी भोपाल फूट सकते है। जिस गति से नए रसायन बन रहे है उस गति स ैउसके गुण–दोष की जांच पड़ताल नही हा ैपा रही है। हरीत क्रांति के नाम से प्रचारित की गई औधोगिक कृषि में कीटनाशकों व रासायनिक खादो ंका इस्तेमाल काफी बढ़ा है। इससे हर तरह के खाद्य पदार्थो मे ं कीटनाशको ंके अंश मौजदू पाय ैजाने लगे है। अन्न, जल, फल, सब्जियां, दूध, मांस, मच्छी सभी मे ंजो शरीर में पहुंच कर नुकसान तो पहुचांते ही है। देश में सिलीकोसिस की बिमारी को पता सबसे पहल ै1947 में लगा था। उन दिनो ंकर्नाटक की कोलार सोना खदानो ंमें काम करने वाल ैलोगो ंमें यह बीमारी पाई गई। यह रोग कोयला, संगमरममर, चांदी, सीसा, जस्ता और मैगनीज की खदानो ंमे ं काम करने वालो ंमें अक्सर पाया जाता है। बिहार की संगमरमर खदानो ंमें हर तीन में से एक मजदरू सिलिकोसिस से पीड़ित है। मजदूरो ंकी सुरक्षा के प्रति कारखानो ंमें काफी लापरवाही बरती जाती है। ऐसबोटोसिस– रासायनिक शब्दो ंमें यह एक सिलिकेट यौगिक है। इसे इमारतां ैका ढांचा खड़ा करने में खासा उपयोगी पाया गया है। परन्तु इसे जिस रासायनिक प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है वह बेहद हानिकारक है। इसके कण बहुत ही बारिक हाते है जो सांस की नली से फेफड़ो ंमें जमा हा ैजाते है जिससे फेफड़ ैअवरूद्ध होत ै है। इस रोग को पल्मोनरी फाइब्रोसिस कहते है जिसका कोई इलाज नहीं है। ब्रिटेन में एस्बेस्ट कारखाने से एक किलोमीटर दूर वाल ैलोगो ंमें भी इसके कणो ंने कैंसर फैलाया है। आज अगर हम पर्यावरण के बचाव के लिए आग ैनही आत ैहै ता ैकल का विकास विनाश मे ंबदल जाएगा।

अंत में हम कह सकते है कि पर्यावरण प्रदुषण से होन ैवाल ैदुष्प्रभावो ंके उत्तर खोजना कठिन है पर हमे ंतो खोजना ही चाहिए। इन सब पर विचार किये बिना मानव समाज सुसीबत में होन ैवाला है। यह पर्यावरण कैस ैसुधरेगा, हमारी प्राकृतिक सम्पदा नए सौदागरो ंके हाथों से कैसे मुक्त होगी। यह सब कुछ सम्पर्ण मानव जाति की पर्यावरण के प्रति जागरूकता से ही सभंव हो सकता है।

संदर्भ

1. *पर्यावरण विकास (पर्यावरण एवं विकास पर राष्ट्रीय पत्रिका)*
2. *परिस्थितिकी एव ंपर्यावरण (वातावरण) बी.पी.गुप्ता*
3- *Encyclopedia of Ecology, Environment and Pollution - M.G. Chitkara.*
4. *पर्यावरण चेतना – धनंजय वर्मा (म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी)*
5. *पर्यावरण एवं सनविकास – प्रो. जगदीश सिहं 6. नई दुनिया, इण्डिया टुडे आदि*